The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 8 | August 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वैदिक साहित्य में स्त्री शिक्षा

फ़ातमा खान

शोधार्थी

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, मध्य प्रदेश।

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

वेदाध्ययन, मंत्र–पाठ, विदुषी, धर्मषास्त्रों दार्षनिक–धारा, याज्ञिक, साधोवधू, ब्रह्मवादिनी

ABSTRACT

ऋग्वेद काल से लेकर 12 वीं शताब्दी तक भारतीय स्त्रियों की स्थिति तथा स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में कई परिवर्तन आये। ऋग्वेद काल में गृहस्थकार्यो एवं ललित कलाओं के अतिरिक्त कन्याओं को वैदिक षिक्षा का अधिकार था। वैदिक काल में पुत्री की शिक्षा उतनी ही आवष्यक समझी जाती थी जितनी पुत्र की ऋग्वेद में षिक्षित स्त्री पुरूष के विवाह की उपयुक्ता बताई है। वैदिक साहित्य में अनेक विदुषियों का उल्लेख हुआ है जो पुरूषों के समान ही अपने–अपने विषय में पारंगत थी। इनमें कई ने तो ऋषियों की भांति ऋचाओं की रचना भी की जैसे विष्वतारा, घोषा, लोपामुद्रा सिकता आदि। अपनिषद–काल में जब दार्षनिक–धारा का उदय हुआ तो उसमें भी विदुषी महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया गार्गी वाचनवी तथा मैत्री इस काल की प्रमुख विदुषी महिलायें थी। महाकाव्य काल में भी अनेक विदुषी स्त्रियों के विषय में ज्ञात होता है जो वैदिक ज्ञान तथा याज्ञिक अनुष्ठान में भी निष्णांत थी। किन्तु धर्मषास्त्रों के काल में स्त्री षिक्षा का तेजी ह्रास शुरू हो गया था। स्त्रियों का उपनयन संस्कार समाप्त हो गया था। पति सेवा तथा गृहकार्य ही उनकी धर्म–कार्म बन गया था। धर्मषास्त्रों के काल में विदुषी महिलाओं का उल्लेख

कम दिखाई देता है। गुप्तकाल से लेकर 12वीं शताब्दी तक के काल में स्त्री और स्त्री शिक्षा दोनों की स्थिति में गिरावट आयी। इस काल में समृद्ध तथा सुसंस्कृत परिवारों तथा राज–परिवारों की कन्याएँ ही षिक्षा प्राप्त करती थी।

प्रस्तावनाः–

वैदिक साहित्य के अध्ययन पता चलता है कि ऋग्वेद काल से लेकर गुप्तकाल तक स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में कई परिवर्तन हुए। स्त्री दषा तथा स्त्री शिक्षा दोनों ही में अनेक परिवर्तन आये। ऋग्वेद काल में जहाँ स्त्रियों को शिक्षा का अधिकारी प्राप्त था वही धर्मषास्त्रों के काल तक आते–आते यह अधिकारी समाप्त हो जाता है। वैदिक काल में शिक्षा का आधार मूलतः धार्मिक था अतः मन्त्र–पाठ की शुद्धता के लिए वेदाध्ययन आवष्यक था उस समय स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार था। वैदिक काल में बालकों के भांति बालिकाओं का उपनयन भी स्वभाविक ही था। उपनिषद काल में कई विदुषी महिलाओं ने दार्षनिक–धारा के उदय में महत्वपूर्ण योगदान दिया महाकाव्य काल में रामायण तथा महाभारत से ज्ञात होता है कि इस काल में भी स्त्रियाँ षिक्षित होती थी। धर्मषास्त्रों के काल से स्त्री षिक्षा के क्षेत्र में स्थिति परिवर्तित होती दिखाई देती है अब स्त्रियों का उपनयन संस्कार समाप्त हो गया था। गृहकार्य तथा पति की सेवा उनका धर्म–कर्म बन गया। कन्या की शिक्षा अब उसके विवाह के लिये आवष्यक नहीं रही थी। जन–साधारण महिलाओं की षिक्षा का ह्रास हो रहा है था। गुप्तकाल से लेकर 12वीं शताब्दी तक के काल में स्त्री और स्त्रियों की षिक्षा दोनों की ही स्थिति में गिरावट आयी। इस काल में कन्याओं की उच्च शिक्षा धनी परिवारों तक सीमित थी।

वैदिक साहित्य में स्त्री शिक्षाः–

वैदिक काल में शिक्षा का आधार मूलतः धार्मिक था अतः मन्त्र–पाठ की शुद्धता के लिये वेदाध्ययन आवष्यक था। ऋग्वैतिक काल में कन्याओं को गृहस्थ कार्यो एवं ललिति कलाओं के अतिरिक्त वैदिक शिक्षा का भी अधिकार था पुत्री की शिक्षा भी उतनी ही आवष्यक समझी जाती थी जितनी पुत्र की। वैदिक संध्या प्रार्थना और यज्ञों में वैदिक मंत्रों का पाठ वही कर सकता है, जिसका उपनयन हुआ हो। उपनयन संस्कार वैदिक काल में बालकों की भांति बालिकाओं का भी स्वभाविक ही

था। अर्थवेद, में कन्याओं द्वारा ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का स्पष्ट उल्लेख है। मनुस्मृति में भी इस बात का उल्लेख हुआ है कि बालिकाओं के लिये उपनयन संस्कार अनिवार्य है। वैदिक साहित्य में अनेक विदुषियों का उल्लेख हुआ है जो पुरूषों के समान ही अपने–अपने विषय में पारंगत थी। इनमें कई ने तो ऋषियों की भांति ऋचाओं की रचना भी की थी। ऋग्वेद काल में स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकारी प्राप्त था उपनिषद काल में दार्षनिक–धारा के उदय के समय भी विदुषी महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। गर्गी वाचनवी तथा मैत्रीय इस काल की प्रमुख विदुषी महिलायें थी। वैदिक काल में षिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों के दो वर्ग हुआ करते थे–

(1) साधोवधू और (2) ब्रह्मवादिनी/ साधोवधू उन कन्याओं को कहा जाता था जिसका विवाह षिक्षा प्राप्त करने के अनन्तर कर दिया जाता था। ब्रह्मवादिनी वे कन्याएँ होती थी जो विवाह एवं गृहस्थ जीवन का विचार त्याग कर आजीवन विद्याध्यन करती हुई तपस्या एवं अनुषासन का जीवन व्यतीत करती थी।

महाकाव्य काल से भी ऐसी अनेक स्त्रियों के विषय में ज्ञात होता है जो विदुषी थी वे वैदिक ज्ञान तथा याज्ञिक अनुष्ठान में भी निष्णांत थी। रामायण से ज्ञात होता है कि अत्रेयी वेदान्त की विद्यार्थिनी थी और वह वाल्मीकी के आश्रम में लव–कुष के साथ पढ़ती थी इसी प्रकार महाभारत में पाण्डवों की माता कुन्ती अर्थववेद की पण्डिता कही गयी है। द्रोपदी ने भी राजनीति की षिक्षा प्राप्त की थीं किनतु जन–साधारण की बीच स्त्री षिक्षा का ह्रास हो रहा था। वस्तुतः छोटी उम्र में ही कन्याओं के विवाह की प्रथा के प्रचलित हो जाने के कारण स्त्री शिक्षा पर भी प्रभाव पड़ा।

धर्मषास्त्रों के काल में स्त्री शिक्षा का तेजी से ह्रास शुरू हो गया था। स्त्रियों का उपनयन संस्कार समाप्त होने के कारण शिक्षा अधिकार समाप्त हो गया था। गृहकार्य तथा पति की सेवा ही उनका धर्म–कर्म बन गया था। कन्या की षिक्षा अब उसके विवाह के लिये आवष्यक नहीं रही थी। गुप्त काल से लेकर 12वीं शताब्दी तक के काल में स्त्री तथा स्त्री षिक्षा दोनों की ही स्थिति में गिरावट आयी। इस काल के साहित्य से ज्ञात होता है कि पुत्र की तुलना में पुत्री की स्थिति अच्छी नहीं थी। इस काल में समृद्ध तथा राजपरिवार ही अपने घर पर ही अध्यापकों की व्यवस्था कर अपनी

कन्याओं को शिक्षा दिलवाते थे। साधारण परिवारों की आर्थिक स्थिति ऐसी न थी और न ही वे इसकी व्यवस्था करते थे।

इस प्रकार ऋग्वेद काल से लेकर 12वी शताब्दी तक स्त्री शिक्षा की दषा में लगातार परिवर्तन देखे जा सकते है। जहाँ ऋग्वेद काल में स्त्री को षिक्षा का अधिकार प्राप्त था वहीं धर्मषास्त्रों के काल में उससे शिक्षा का अधिकार छिन जाता है वह मात्र एक गृहणी बनकर रहती है तथा पति सेवा और गृहकार्य ही उसका धर्म–कर्म हो गया था। सम्पन्न परिवारों तथा राजपरिवारों की कन्याओं की स्थिति ठीक थी वह शिक्षा प्राप्त कर सकती थी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. ऋग्वेद, 10.717
2. मनुस्मृति, 2.66
3. याज्ञवल्लय स्मृति प्रा. 228
4. अल्तेकर ए. एस., प्राचीन भारतीय षिक्षण पद्धति, पृ. 158
5. पाण्डेय, विमलचन्द्र, भारतवर्ष का सामाजिक अतिहास पृ.112
6. मिश्र, जयषंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ.233
7. मुखर्जी, आर.के, ऐषियेंट इण्डियन ऐजुकेषन, पृ. 37
8. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पृ. 62
9. मिश्र, रमाषंकर, पाणिनीय शिक्षा